बाइबल क्या शिक्षा देती है?

बाइबल बहुत सी बातों के विषय में शिक्षा देती है। इस छोटे से पाठ के द्वारा हम उन समस्त शिक्षाओं पर विचार नहीं कर सकते, इसलिए हम इसके प्रेरणायुक्त पृष्ठों में से कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर ध्यान देंगे। पाठ के अधिकांश भाग में, आप बाइबल के उन पदों को पढ़ेंगे जो विभिन्न विषयों पर आधारित है। हमारा आपसे निवेदन है कि आप बाइबल की शिक्षाओं पर अच्छी तरह से विचार करें।

1. परमेश्वर के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल यह शिक्षा देती है कि परमेश्वर है। ''आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।'' (उत्पत्ति 1:1)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर ने सब वस्तुओं की सृष्टि की थी। ''सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है, उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।'' (यूहन्ना 1:3)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि मनुष्य को परमेश्वर ने बनाया है। ''तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके उसने मनुष्य की सृष्टि की।'' (उत्पत्ति 1:27)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर आत्मा है। ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।'' (यूहन्ना 4:24)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर अनादि है। ''इससे पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही ईश्वर है।'' (भजन 90:2)

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर सर्वव्यापक है। ''कि वे परमेश्वर को ढूंढे, कदाचित उसे टटोलकर पा जायें तो भी वह हम में से किसी से दूर नहीं।'' (प्रेरितों 17:27)

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर सब कुछ जानता है। ''और सृष्टि की कोई वस्तु उससे छिपी नहीं है वरन जिससे हमें काम है, उसकी आंखों के सामने सब वस्तुयें खुली और बेपरद है।'' (इब्रानियों 4:13)

ड. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान है। ''और वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएं उसी में स्थिर रहती है।'' (कुलु. 1:17)

ढ. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर पवित्र है। ''...पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु

परमेश्वर, सर्वशक्तिमान, जो था, और जो है, और जो आने वाला है।'' (प्रका. 4:8)

ण. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर प्रेम है। ''जो प्रेम नहीं रखता, वह परमेश्वर को नहीं जानता, क्योंकि परमेश्वर प्रेम है।'' (1 यूहन्ना 4:8)

त. बाइबल शिक्षा देती है कि केवल मूर्ख ही परमेश्वर को अस्वीकार करते है। ''मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर है ही नहीं।'' (भजन 14:1)

2. यीशु मसीह के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि आदि में यीशु मसीह परमेश्वर के साथ था। ''आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था। यही आदि में परमेश्वर के साथ था।'' (यूहन्ना 1:2)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह के विषय में प्रतिज्ञा की गई थी कि वह मनुष्यों का उद्धारकर्त्ता होकर आयेगा। ''और मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और उसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूंगा, वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।'' (उत्पत्ति 3:15)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह के आने के विषय में भविष्यद्वाणी में कहा गया था। ''वह सताया गया, तौ भी वह सहता रहा और अपना मुंह न खोला; जिस प्रकार भेड़ बध होने के समय वा भेड़ी ऊन कतरने के समय चुपचाप शांत रहती है, वैसे ही उसने अपना मुंह न खोला। (यशायाह 53:7)। और यह उस समय पूर्ण हुआ जब यीशु मसीह ने क्रूस पर मृत्यु सही, और प्रेरितों 8 अध्याय में हम पढ़ते हैं जब फिलिप्पुस कूश देश के एक खोजे से कहता है कि यह यीशु मसीह के विषय में कहा गया है।

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह का जन्म कुंवारी मरियम से हुआ था। प्रभु के जन्म के विषय में, बाइबल कहती है, ''यह सब कुछ इसलिये हुआ कि जो वचन प्रभु ने भविष्यद्वक्ता के द्वारा कहा था; वह पूरा हो। कि, देखो एक कुंवारी गर्भवती होगी और एक पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानुएल रखा जाएगा जिसका अर्थ यह है, परमेश्वर हमारे साथ है।'' (मत्ती 1:22, 23)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह ने अनेक आश्चर्य-क्रम किये। पतरस ने कहा था, ''हे इस्राएलियो, ये बातें सुनो: कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिसका परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो परमेश्वर ने तुम्हारे बीच उसके द्वारा कर दिखलाए जिसे तुम आप ही जानते हो।'' (प्रेरितों 2:22)

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है। ''वह बोल ही रहा था,

कि देखो, एक उजले बादल ने उन्हें छा लिया, और देखो; उस बादल में से यह शब्द निकला, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस मैं प्रसन्न हूं : इस की सुनो।'' (मत्ती 17:5)। पतरस ने कहा ''...कि तू जीवते परमेश्वर का पुत्र मसीह है।'' (मत्ती 16:16)

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह निष्पाप था। ''जो पाप से अज्ञात था, उसी को उसने हमारे लिये पाप ठहराया, कि हम उसमें होकर परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएं।'' (2 कुरि. 5:21)

ड. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह उद्धार करने के लिए आया। ''क्योंकि मनुष्य का पुत्र खोए हुओं को ढूंढने और उनका उद्धार करने आया है।'' (लूका 19:10)

ढ. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह हमारे लिये मरा। ''परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।'' (रोमियों 5:8)

ण. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह मृतकों में से जी उठा। ''और प्रेरित बड़ी सामर्थ से प्रभु यीशु के जी उठने की गवाही देते रहे और उन सब पर बड़ा अनुग्रह था।'' (प्रेरितों 4:33)

त. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु अपने पिता के पास स्वर्ग में चला गया। प्रभु यीशु के स्वर्गारोहण के विषय में, ''और उसके जाते समय जब वे आकाश की ओर ताक रहे थे, तो देखो, दो पुरुष श्वेत वस्त्र पहिने हुए उनके पास आ खड़े हुए।'' (प्रेरितों 1:10)

थ. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह फिर आएगा। ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।'' (यूहन्ना 14:1-3)

3. पवित्र आत्मा के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि पवित्र आत्मा यीशु मसीह को बहुतायत से मिला था अर्थात्, असीमित। ''क्योंकि जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।'' (यूहन्ना 3:34)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह ने प्रेरितों से प्रतिज्ञा की थी कि वह उन पर आत्मा भेजेगा। ''तौ भी मैं तुमसे सच कहता हूं, कि मेरा जाना तुम्हारे लिये अच्छा है, क्योंकि यदि मैं न जाऊं, तो वह सहायक तुम्हारे पास न

आएगा, परन्तु यदि मैं जाऊंगा, तो उसे तुम्हारे पास भेज दूंगा।'' (यूहन्ना 16:7)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि आत्मा प्रेरितो को सत्य का मार्ग दिखाने के लिये भेजा गया था। ''परन्तु जब वह अर्थात सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा, वही कहेगा, और आने वाली बातें तुम्हें बताएगा।'' (यूहन्ना 16:13)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों का बपतिस्मा पवित्र आत्मा के द्वारा हुआ था। ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे, और एकाएक आकाश से बड़ी आंधी की सी सनसनाहट का शब्द हुआ, और उससे सारा घर जहां वे बैठे थे गूंज गया। और उन्हें आग की सी जीभें फटती हुई दिखाई दीं; और उन में से हर एक पर आ ठहरीं। और वे सब पवित्र आत्मा से भर गए, और जिस प्रकार आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ दी, वे अन्य अन्य भाषा बोलने लगे।'' (प्रेरितों 2:1-4)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि कुरनेलियुस और उसके कुटुम्बियों ने भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किया था और यह प्रगट करता है कि प्रभु को अन्य जाति वाले भी उतने ही स्वीकार्य थे जिस प्रकार से कि यहूदी। ''पतरस यह बातें कह ही रहा था, कि पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया। और जितने खतना किए हुए विश्वासी पतरस के साथ आए थे, वे सब चकित हुए कि अन्य जातियों पर भी पवित्र आत्मा का दान उंडेला गया है। क्योंकि उन्होंने उन्हें अन्य-अन्य भाषा बोलते और परमेश्वर की बड़ाई करते सुना। इस पर पतरस ने कहा; क्या कोई जल को रोक सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारी नाई पवित्र आत्मा पाया है? और उसने आज्ञा दी कि उन्हें यीशु मसीह के नाम में बपतिस्मा दिया जाए, तब उन्होंने उस से बिनती की कि कुछ दिन हमारे साथ रह।'' (प्रेरितों 10:44-48)। स्मरण रहे कि पतरस ने इस बात का स्पष्टीकरण किया कि कुरनेलियुस और उसके कुटुम्बियों ने पवित्र आत्मा उसी प्रकार से पाया था जिस प्रकार से उन्होंने (अर्थात प्रेरितों ने)। पुनः प्रेरितों ग्यारह अध्याय में, वह इस सत्य के ऊपर बल देता है कि कुरनेलियुस और उसके कुटुम्बियों ने पवित्र आत्मा उसी प्रकार से प्राप्त किया जिस प्रकार से आरंभ में उन्होंने। वह कहता है कि उनको पवित्र आत्मा वैसे ही प्राप्त हुआ जैसे पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों को हुआ था। नये नियम में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे की केवल यही दो घटनाएं हैं।

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि प्रेरितों ने कुछ निश्चित व्यक्तियों के ऊपर हाथ रखे थे ताकि वे पवित्र आत्मा की अदभुत शक्ति प्राप्त कर सकें। ''जब प्रेरितों ने जो यरुशलेम में थे सुना कि सामरियों ने परमेश्वर का वचन मान लिया है तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा। और उन्होंने जाकर उनके लिये

प्रार्थना की कि पवित्र आत्मा पाएं। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम से बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा पाया।'' (प्रेरितों 8:14-17)। इस बात के कोई प्रमाण प्राप्त नहीं है कि जिन्होंने प्रेरितों द्वारा हाथ रखे जाने से पवित्र आत्मा की शक्ति पाई थी, वे उसे किन्हीं और व्यक्तियों को दे सके या नहीं?

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि पवित्र आत्मा का दान (गैर-अद्‌भुत शक्ति) उन सभों को दिया गया था जो उसकी आज्ञाओं का पालन करते थे। ''पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने-अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' (प्रेरितों 2:38)

ड. बाइबल शिक्षा देती है कि आत्मा केवल एक ही है। ''एक ही देह है, और एक ही आत्मा...'' (इफि. 4:4)

ढ. बाइबल शिक्षा देती है कि हमें आत्मा के अनुसार चलना चाहिये। ''यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।'' (गलतियों 5:25)

ण. बाइबल शिक्षा देती है कि आत्मा फल लाती है। ''पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है; ऐसे-ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं है।'' (गलतियों 5:22, 23)

4. पवित्र शास्त्र के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर बोलते थे। ''और हमारे पास जो भविष्यद्वक्ताओं का वचन है, वह इस घटना से दृढ़ ठहरा और तुम यह अच्छा करते हो, जो यह समझकर उस पर ध्यान करते हो कि वह एक दीया है, जो अंधियारे स्थान में तब तक प्रकाश देता रहता है जब तक कि पौ न फटे, और भोर का तारा तुम्हारे हृदयों में न चमक उठे। पर पहिले यह जान लो कि पवित्र शास्त्र की कोई भी भविष्यद्वाणी किसी के अपने ही विचार धारा के आधार पर पूर्ण नहीं होती। क्योंकि कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्छा से कभी नहीं हुई पर भक्तजन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।'' (2 पतरस 1:19-21)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि समस्त पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है। ''हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्पर हो जाए।'' (2 तीमु. 3:16, 17)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर की व्यवस्था खरी है। ''यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है, यहोवा के नियम विश्वास योग्य है, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देती है; यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आंखों में ज्योति ले आती है।'' (भजन 19:7, 8)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर का वचन सत्य है। ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है।'' (यूहन्ना 17:17)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर यीशु मसीह के द्वारा बोला। ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन दिनों के अन्त में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है।'' (इब्रानियों 1:1, 2)

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर का वचन प्रबल है। ''क्योंकि परमेश्वर का वचन जीवित, और प्रबल, और हर एक दोधारी तलवार से भी बहुत चोखा है, और जीव और आत्मा को और गांठ, गांठ और गूंदे-गूंदे को अलग करके, वार पार छेदता है; और मन की भावनाओं और विचारों को जांचता है।'' (इब्रानियों 4:12)

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि पवित्र शास्त्र में से कुछ भी बढ़ाया या घटाया नहीं जा सकता। ''मैं हर एक को जो इस पुस्तक की भविष्यद्वाणी की बातें सुनता है, गवाही देता हूं, कि यदि कोई मनुष्य इन बातों में कुछ बढ़ाए, तो परमेश्वर उन विपत्तियों को जो इस पुस्तक में लिखी है, उस पर बढ़ाएगा, और यदि कोई इस भविष्यद्वाणी की पुस्तक की बातों में से कुछ निकाल डाले, तो परमेश्वर उस जीवन के पेड़ और पवित्र नगर में से जिसकी चर्चा इस पुस्तक में है, उसका भाग निकाल देगा।'' (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19)

ड. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह के सुसमाचार या परमेश्वर के वचन को हम में से कोई भी न बिगाड़े। ''मुझे आश्चर्य होता है, कि जिसने तुम्हें मसीह के अनुग्रह से बुलाया उससे तुम इतनी जल्दी फिर कर और ही प्रकार के सुसमाचार की ओर झुकने लगे। परन्तु वह दूसरा सुसमाचार है ही नहीं, पर बात यह है, कि कितने ऐसे हैं, जो तुम्हें घबरा देते, और मसीह के सुसमाचार को बिगाड़ना चाहते हैं। परन्तु यदि हम या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हमने तुमको सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो स्रापित हो। जैसा हम पहिले कह चुके हैं, वैसा ही मैं अब फिर कहता हूं, कि उस सुसमाचार को छोड़ जिसे तुमने ग्रहण किया है, यदि कोई और सुसमाचार सुनाता है, तो स्रापित हो....।'' (गलतियों 1:6-9)

ढ. बाइबल शिक्षा देती है कि यह आकाश में स्थिर है। ''हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश में सदा तक स्थिर रहता है।'' (भजन 119:89)

ण. बाइबल शिक्षा देती है कि पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती। ''यदि उसने उन्हें ईश्वर कहा जिनके पास परमेश्वर का वचन पहुंचा (और पवित्र शास्त्र की बात लोप नहीं हो सकती।'' (यूहन्ना 10:35)

त. बाइबल शिक्षा देती है कि यह युगानुयुग स्थिर रहेगा। ''परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहेगा, और यह वही सुसमाचार का वचन है जो तुम्हें सुनाया गया था।'' (1 परतस 1:25)

थ. बाइबल शिक्षा देती है कि यह सदैव अटल रहेगा। ''घास तो सूख जाती, और फूल मुर्झा जाता है; परन्तु हमारे परमेश्वर का वचन सदैव अटल रहेगा।'' (यशायाह 40:8)

द. बाइबल शिक्षा देती है कि प्रभु का वचन कभी नहीं टलेगा। ''आकाश और पृथ्वी टल जायेंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगी।'' (मत्ती 24:35)

5. कलीसिया के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि कलीसिया की स्थापना के विषय में भविष्यद्वाणी में कहा गया था कि ''अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाई उसकी ओर चलेंगे। और बहुत देशों के लोग आयेंगे, और आपस में कहेंगे, आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन में जाएं, तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा।'' (यशायाह 2:2, 3)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह ने अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा की थी। ''और मैं भी तुझ से कहता हूं, कि तू पतरस है; और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे।'' (मत्ती 16:18)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि इसकी स्थापना यरुशलेम में हुई थी। ''और उनसे कहा, यों लिखा है; कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरुशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा।'' (लूका 24:46, 47)। यह प्रेरितों 2 अध्याय में पूर्ण हुआ, जब यरूशलेम में प्रेरितों ने पश्चात्ताप व पापों की क्षमा का प्रचार किया।

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि इसकी स्थापना पिन्तेकुस्त के दिन ई. सं. 33 में हुई थी। इसका वर्णन प्रेरितों 2 अध्याय में मिलता है।

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि इसने मसीह का नाम धारण करके उसके नाम की प्रतिष्ठा की है। उसी कलीसिया की अन्य मण्डलियों के विषय में, पौलुस ने रोम की कलीसिया को लिखा, ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।'' (रोमियों 16:16)। 1 कुरिन्थियों 12:27 में इसे मसीह की देह कहा गया है परन्तु कुलुस्सियों 1:18 में हम पढ़ते हैं कि देह कलीसिया है। अर्थात मसीह की कलीसिया।

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह ने कलीसिया से इतना प्रेम किया कि उसने अपने आपको उसके लिए दे दिया। ''हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिये दे दिया।'' (इफि. 5:25)

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह ने कलीसिया के लिये अपना लोहू बहाया। ''इसलिये अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है।'' (प्रेरितों 20:28)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि एक ही कलीसिया है। ''एक ही देह है...'' (इफ़िसियों 4:4)। और इफिसियों 1:22,23 में हम पढ़ते हैं कि देह ही कलीसिया हैॅ तब, यदि एक ही देह है और देह कलीसिया है, तो फिर एक ही कलीसिया है।

ढ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है। ''क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है।'' (इफ़िसियों 5:23)

ण. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह कलीसिया का सिर है। ''और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वहीं प्रधान ठहरे।'' (कुलु. 1:18)

त. बाइबल शिक्षा देती है कि उद्धार पाने वालों को मसीह कलीसिया में मिला देता है। ''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था।'' (प्रेरितों 2:47)

थ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह अपनी कलीसिया के लिए वापस आएगा। ''और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो। (इफ़िसियों 5:27)

6. उद्धार की योजना के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि समस्त मनुष्य जाति पापी है। ''इसलिये कि सबने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित है।'' (रोमियों 3:23)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को दे दिया ताकि मनुष्य उद्धार पाए। ''क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'' (यूहन्ना 3:16)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह मरा, गाड़ा गया, और जी उठा ताकि मनुष्य का उद्धार हो। ''हे भाइयो, मैं तुम्हें वही सुसमाचार बताता हूं जो पहिले सुना चुका हूं, जिसे तुम ने अंगीकार भी किया था और जिसमें तुम स्थिर भी हो। उसी के द्वारा तुम्हारा उद्धार भी होता है, यदि उस सुसमाचार को जो मैंने तुम्हें सुनाया था स्मरण रखते हो; नहीं तो तुम्हारा विश्वास करना व्यर्थ हुआ। इसी कारण मैंने सब से पहिले तुम्हें वही बात पहुंचा दी, जो मुझे पहुंची थी, कि पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मर गया, और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी उठा।'' (1 कुरि. 15:1-4)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि सुसमाचार में उद्धार देने की सामर्थ है। ''क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करने वाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।'' (रोमियों 1:16)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि सुसमाचार संसार भर में फैलाने के लिए है। ''और उसने उनसे कहा, तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।'' (मरकुस 16:15, 16)

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि सुसमाचार की आज्ञाएं यह है:

1. हमें सत्य को सुनना चाहिये। ''सो विश्वास सुनने से, और सुनना मसीह के वचन से होता है।'' (रोमियों 10:17)

2. हमें परमेश्वर में विश्वास करना चाहिए। ''और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आने वाले को विश्वास करना चाहिये, कि वह है; और अपने खोजने वालों को प्रतिफल देता है।'' (इब्रानियों 11:6)

3. हमें अपने पापों से पश्चात्ताप करना चाहिए अर्थात मन फिराना चाहिए। ''इसलिए परमेश्वर अज्ञानता के समयों से आनाकानी करके, अब हर जगह सब मनुष्यों को मन फिराने की आज्ञा देता है।'' (प्रेरितों 17:30)

4. हमें मसीह को परमेश्वर का पुत्र स्वीकार करना चाहिए। ''कि यदि अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करें और अपने मन से विश्वास करे, कि

परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा। क्योंकि धार्मिकता के लिए मन से विश्वास किया जाता है, और उद्धार के लिए मुंह से अंगीकार किया जाता है।'' (रोमियों 10:10)

5. हमें पापों की क्षमा के लिये बपतिस्मा लेना चाहिए। ''पतरस ने उनसे कहा, मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।'' (प्रेरितों 2:38)

7. बपतिस्मे (जल में गाड़े जाना) के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि केवल एक ही बपतिस्मा है। ''एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा।'' (इफ़िसियों 4:5)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा, गाड़ा जाना है। ''और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गये, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके जिसने उसको मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।'' (कुलु. 2:12)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा, जल में गाड़ा जाना है। ''मार्ग में चलते चलते वे किसी जल की जगह पहुंचे, तब खोजे ने कहा, देख यहां जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है? फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है: उसने उत्तर दिया मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया। जब वे जल में से निकलकर ऊपर आए, तो प्रभु का आत्मा फिलिप्पुस को उठा ले गया, सो खोजे ने उसे फिर न देखा, और वह आनन्द करता हुआ अपने मार्ग चला गया।'' (प्रेरितों 8:36-39)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा पिता, पुत्र और पवित्रात्मा के नाम में होता है। ''इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।'' (मत्ती 28:19, 20)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा मसीह में हमें मिलाता है। ''क्या तुम नहीं जानते कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।'' (रोमियों 6:3, 4)

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा हमें कलीसिया में मिलाता है। ''क्योंकि हम सबने, क्या यहूदी हो, क्या यूनानी, क्या दास, क्या स्वतंत्र, एक ही आत्मा के द्वारा एक देह होने के लिये बपतिस्मा लिया, और हम सबको एक ही आत्मा पिलाया गया।'' (1 कुरि. 12:13)

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि बपतिस्मा बचाता है। ''और उसी पानी का दृष्टान्त भी, अर्थात् बपतिस्मा, यीशु मसीह के जी उठने के द्वारा, अब तुम्हें बचाता है; (उससे शरीर के मैल को दूर करने का अर्थ नहीं है, परन्तु शुद्ध विवेक से परमेश्वर के वश में हो जाने का अर्थ है)।'' (1 परतस 3:21)

8. नाम के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि उद्धार मसीह के नाम में है। ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं, क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिस के द्वारा हम उद्धार पा सके।'' (प्रेरितों 4:12)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि पहिले चेले मसीही कहलाए थे। ''और चेले सबसे पहिले अन्ताकिया ही में मसीही कहलाए थे।'' (प्रेरितों 11:26)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि हम मसीही नाम के द्वारा मसीह की महिमा करें। ''पर यदि मसीही होने के कारण दुख पाए, तो लज्जित न हो, पर इस बात के लिए परमेश्वर की महिमा करे।'' (1 पतरस 4:16)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि हमें सब कुछ मसीह के नाम में करना चाहिये। और वचन से या काम से जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो; और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।'' (कुलु. 3:17)

9. उपासना के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि कुछ लोग अनजानी उपासना करते है। ''क्योंकि मैं फिरते हुए तुम्हारी पूजने की वस्तुओं को देख रहा था, तो एक ऐसी वेदी भी पाई, जिस पर लिखा था, कि ''अनजाने ईश्वर के लिये।'' सो जिसे तुम बिना जाने पूजते हो, मैं तुम्हें उसका समाचार सुनाता हूं।'' (प्रेरितों 17:23)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि कुछ लोग व्यर्थ में उपासना करते हैं। ''और ये व्यर्थ मेरी उपासना करते हैं, क्योंकि मनुष्यों की विधियों को धर्मोपदेश करके सिखाते हैं।'' (मत्ती 15:9)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर केवल सच्ची उपासना को ही स्वीकार करता है। ''परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।'' (यूहन्ना 4:24)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि परमेश्वर की उपासना आत्मा और सच्चाई से करने के लिए हम :

1. वचन का अध्ययन करने के लिए जमा हों। ''अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।'' (2 तीमु. 2:15)
2. प्रार्थना करने के लिए जमा हो। ''और वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, और संगति रखने में और रोटी तोड़ने में और प्रार्थना करने में लौलीन रहें।'' (प्रेरितों 2:42)
3. गाने के लिए जमा हो। ''और आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो, और अपने अपने मन में प्रभु के सामने गाते और कीर्तन करते रहो।'' (इफि. 5:19)
4. प्रभु-भोज में भाग लेने के लिए जमा हो। ''सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे, हुए तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उनसे बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा।'' (प्रेरितों 20:7)
5. देने के लिए जमा हो। ''सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।'' (1 कुरि. 16:2)

10. उपासना के दिन के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि प्रभु यीशु सप्ताह के पहिले दिन जी उठा था। ''परन्तु सप्ताह के पहिले दिन बड़े भोर को वे सुगंधित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थी, लेकर कब्र पर आई, और उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया, और भीतर जाकर प्रभु यीशु की लोथ न पाई।'' (लूका 24:1-3)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि पवित्र आत्मा आया, सुसमाचार का पहिला उपदेश दिया गया, और सप्ताह के पहिले दिन कलीसिया की स्थापना हुई। ''जब पिन्तेकुस्त का दिन आया, तो वे सब एक जगह इकट्ठे थे।'' (प्रेरितों 1:2)। यह बातें पिन्तेकुस्त के दिन हुई और पिन्तेकुस्त सर्वदा सप्ताह के पहिले दिन बिना किसी रूकावट के आया।

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि प्रथम मसीही सप्ताह के पहिले दिन उपासना करने के लिए जमा हुए। ''सप्ताह के पहिले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिए इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें कीं. ...।'' (प्रेरितों 20:7)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीहियों को आज्ञा दी गई थी कि वे सप्ताह के

पहिले दिन देने के लिए जमा हो। ''सप्ताह के पहिले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े।'' (1 कुरि. 16:2)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि इसे प्रभु का दिन कहा जाता है। ''कि मैं प्रभु के दिन आत्मा में आ गया....'' (प्रकाशित. 1:10)

11. मसीही जीवन के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि जब कोई मसीही जीवन आरंभ करता है तब वह मसीह में नई सृष्टि बन जाता है। ''सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, वे सब नई हो गई।'' (2 कुरि. 5:17)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि उस नई सृष्टि को आत्मिक दूध में अवश्य भाग लेना चाहिए। ''नये जन्मे हुए बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।'' (1 पतरस 2:2)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि जो मसीही है उसे बढ़ना और प्रबल होना है। ''पर हमारे प्रभु, और उद्धारकर्त्ता यीशु मसीह के अनुग्रह और पहचान में बढ़ते जाओ। उसी की महिमा अब भी हो, और युगानुयुग होती रहे। आमीन।'' (2 पतरस 3:18, 19)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीही जन को परमेश्वर के सारे हथियार बांधने हैं। ''निदान, प्रभु में और उसकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त बनो। परमेश्वर के सारे हथियार बांध लो; कि तुम शैतान की युक्तियों के सामने खड़े रह सको।'' (इफि. 6:10, 11)

ङ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीही जन अपने आपको एक जीवित बलिदान करके चढ़ाए। ''इसलिए हे भाइयो, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूं, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।'' (रोमियों 12:1)

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीही जन को कार्य करने वाला होना चाहिये। ''सो हे मेरे प्रिय भाइयो, दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ, क्योंकि यह जानते हो, कि तुम्हारा परिश्रम प्रभु में व्यर्थ नहीं है।'' (1 कुरि. 15:58)

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीही जन को मसीही अनुग्रह बढ़ाने चाहिये। ''और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्‌गुण, और सद्‌गुण पर समझ। और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति। और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की

प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचानने में निकम्मे और निष्फल न होने देंगी।'' (2 पतरस 1:5-8)

ड. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीही जन को भक्ति का जीवन बिताना चाहिए। ''क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट है, जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है, और हमें चिताता है कि हम अभक्ति और सांसारिक अभिलाषाओं से मन फेरकर इस युग में संयम और धर्म और भक्ति से जीवन बिताएं।'' (तीतुस 2:11, 12)

ढ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीही जन को विश्वासी होना चाहिए। ''...प्राण देने तक विश्वासी रह; तो मैं तुझे जीवन का मुकुट दूंगा'' (प्रकाशित. 2:10)

12. मृत्यु के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि जन्म का एक समय है और मरने का भी एक समय है। ''जन्म का समय, और मरने का भी समय....।'' (सभोपदेशक 3:2)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि आदम में सब मरते हैं, ''और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे।'' (1 कुरि. 15:22)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि हम जीएं या मरें हमें परमेश्वर की महिमा करनी चाहिये। ''क्योंकि यदि हम जीवित है, तो प्रभु के लिये जीवित है; और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिये मरते हैं, सो हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के है।'' (रोमियों 14:8)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि जीवन कम है। ''तुम जो यह कहते हो, कि आज या कल हम किसी और नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे, और व्योपार करके लाभ उठाएंगे। और यह नहीं जानते कि कल क्या होगा, सुन तो लो, तुम्हारा जीवन है ही क्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है।'' (याकूब 4:13, 14)

13. यीशु मसीह के पुनरागमन के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि वह फिर आएगा। ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान है, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।'' (यूहन्ना 14:1-3)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि वह ऐसे आएगा जैसे रात्री के समय चोर आता है। ''परन्तु प्रभु का दिन चोर की नाई आ जाएगा, उस दिन आकाश बड़ी हड़हड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जायेंगे, और पृथ्वी और उस पर के काम जल जायेंगे।'' (2 पतरस 3:10)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि हम प्रभु से मिलने के लिये बादलों पर उठा लिए जाएंगे। ''क्योंकि प्रभु आप ही स्वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूंकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहिले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिए जाएंगे, कि हवा में प्रभु से मिलें, और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।'' (1 थिस्सलु. 4:16, 17)

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि जिन्होंने परमेश्वर की अवज्ञा की है या उसकी आज्ञा को नहीं माना है, उनसे पलटा लेने के लिए यीशु मसीह पुनः आएगा। ''और तुम्हें जो क्लेश पाते हो, हमारे साथ चैन दे; उस समय जबकि प्रभु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा। और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दण्ड पाएंगे। यह उस दिन होगा, जब वह अपने पवित्र लोगों में महिमा पाने, और सब विश्वास करने वालों में आश्चर्य का कारण होने को आएगा क्योंकि तुमने हमारी गवाही की प्रतीति की।'' (2 थिस्सलु. 1:7-10)

14. पुनरुत्थान के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह ही पुनरुत्थान है। ''यीशु ने उससे कहा, पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए, तौभी जीएगा।'' (यूहन्ना 11:25)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि सब पुनर्जीवित हो उठेंगे। ''इससे अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे।'' (यूहन्ना 5:28, 29)

15. न्याय के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि मृत्यु के पश्चात न्याय का होना नियुक्त है। ''और जैसे मनुष्यों के लिये एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुक्त है।'' (इब्रानियों 9:27)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि सब को न्याय का सामना अवश्य करना है। ''क्योंकि अवश्य है, कि हम सबका हाल मसीह के न्याय आसन के समाने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने-अपने भले-बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।'' (2 कुरि. 5:10)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि एक दिन ठहराया गया है जब यीशु मसीह सब मनुष्यों का न्याय करेगा। ''क्योंकि उसने एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रमाणित कर दी है।'' (प्रेरितों 17:31)

16. स्वर्ग के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह अपने लोगों के लिए एक जगह तैयार कर रहा है। ''तुम्हारा मन व्याकुल न हो, तुम परमेश्वर पर विश्वास रखते हो मुझ पर भी विश्वास रखो। मेरे पिता के घर में बहुत से रहने के स्थान हैं, यदि न होते, तो मैं तुम से कह देता क्योंकि मैं तुम्हारे लिये जगह तैयार करने जाता हूं। और यदि मैं जाकर तुम्हारे लिये जगह तैयार करूं, तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा, कि जहां मैं रहूं वहां तुम भी रहो।'' (यूहन्ना 14:1-3)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि जो लोग प्रभु की आज्ञाओं के अनुसार चलते हैं वे स्वर्गीय नगर में प्रवेश करेंगे। ''धन्य वे हैं, जो अपने वस्त्र धो लेते हैं, क्योंकि उन्हें जीवन के पेड़ के पास आने का अधिकार मिलेगा, और वे फाटकों से होकर नगर में प्रवेश करेंगे।'' (प्रकाशित. 22:14)

17. नरक के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि यह एक आग की झील है जिसमें दुष्टों को फेंका जाएगा। ''पर डरपोकों, और अविश्वासियों, और घिनौनों, और हत्यारों, और व्यभिचारियों, और टोन्हों, और मूर्तिपूजकों, और सब झूठों का भाग उस झील में मिलेगा, जो आग और गंधक से जलती रहती है: यह दूसरी मृत्यु है।'' (प्रकाशित. 21:8)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि यह वह स्थान है जहां पर दंड दिया जाता है। ''तो प्रभु भक्तों को परीक्षा में से निकाल लेना और अधर्मियों को न्याय के दिन तक दंड की दशा में रखना भी जानता है।'' (2 पतरस 2:9)

ग. बाइबल शिक्षा देती है कि यह अनन्त विनाश का एक स्थान है। ''वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्त विनाश का दंड पायेंगे।'' (2 थिस्सलु. 1:9)

18. अनन्तकाल के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती है कि यह अनादि है। ''और यह अनन्त दंड भोगेंगे परन्तु धर्मी अनन्त जीवन में प्रवेश करेंगे।'' (मत्ती 25:46)

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि यह युगानुयुग के लिए है। ''और फिर रात न होगी, और उन्हें दीपक और सूर्य के उजियाले का प्रयोजन न होगा, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा, और वे युगानुयुग राज्य करेंगे।'' (प्रकाशित. 22:5)

अब यहां हम समाप्त करते हैं, परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं है कि बाइबल की शिक्षाएं भी समाप्त हो गई। जो कुछ भी लिखा गया है वो इस आशा के साथ लिखा गया है कि यह आपके लिए लाभप्रद हो। यह इसलिए लिखा गया है ताकि आप परमेश्वर की उस सिद्ध योजना के बारे में जान सकें जो मनुष्य के लिये की गई है, यदि आप इन विषयों के बारे में और भी अधिक जानने के उत्सुक हैं, और यदि आप चाहते हैं कि आपको परमेश्वर के वचन का अच्छा ज्ञान हो सके तो हमसे सम्पर्क कीजिये। हमें आशा है कि आपका यह उद्देश्य अवश्य पूरा होगा।

इस छोटे से अध्ययन के द्वारा आपने देखा कि परमेश्वर आप से क्या चाहता है। मैं आपको प्रोत्साहित करना चाहता हूं कि आप परमेश्वर और उसके वचन पर ध्यान दें। उसकी आज्ञा मानिये और उसका यह वायदा है कि वह आपको आपकी कल्पना से भी अधिक आशिष देगा।

आप देखेंगे कि इस अध्ययन में अधिकतर बाइबल में से पवित्र शास्त्र के पदों का उपयोग किया गया है। ऐसा इस विचार से किया गया है क्योंकि परमेश्वर का वचन प्रभावशाली है, और जब कभी भी प्रस्तुत किया जाए, निःसंदेह यह प्रभु के लिए फल लाएगा, और उसके पास खाली न लौटेगा।

परमेश्वर चाहता है कि आप उसे सुनें, उसके ऊपर विश्वास लायें, उसकी आज्ञा को मानें, और उसकी सेवा करें। यदि आप ऐसा करेंगे तो वह आपको कभी नहीं त्यागेगा, न निराश होने देगा, और न असफल होने देगा। परन्तु वह आपका उद्धार करेगा, आपको आशिष देगा, और आपको अनन्त जीवन देगा। बाइबल यही शिक्षा देती है।

प्रश्नों के उत्तर भरकर हमारे पास भेज दीजिये। इसे जाँचकर हम आपको वापस भेज देंगे। अच्छे अध्ययन के लिये हम आपको एक सुन्दर प्रमाण-पत्र भी भेजेंगे, इसलिये प्रश्नों के उत्तर अच्छी तरह से पढ़कर दीजिये।

आपकी परीक्षा

1. परमेश्वर ने पृथ्वी को कब बनाया?.....
2. परमेश्वर ने क्या-क्या बनाया है? .....
3. परमेश्वर का रूप क्या है? .....
4. परमेश्वर की आयु क्या है? .....
5. परमेश्वर कहां हैं? .....
6. परमेश्वर के अस्तित्व के विषय में हम कैसे जान सकते हैं? .....
   .....
7. वह कौन है जो परमेश्वर के अस्तित्व का इनकार करता है? .....
   .....
8. यीशु मसीह आदि में कहां था? .....
9. प्रभु यीशु की माता कौन थी? .....
10. क्या परमेश्वर अपने पुत्र से प्रसन्न हुआ है? .....
11. यीशु मसीह पृथ्वी पर क्यों आया था? .....
12. यीशु मसीह ने हमारे लिए क्या किया?.....
13. यीशु मसीह की मृत्यु के पश्चात क्या हुआ था? .....
    .....
14. प्रभु यीशु अब कहां है? .....
15. क्या यीशु मसीह फिर कभी वापस आएगा? .....
16. यीशु मसीह को आत्मा किस प्रकार से दिया गया था? .....
    .....
17. प्रेरितों से यीशु मसीह ने क्या प्रतिज्ञा की थी? .....
18. आत्मा क्यों भेजा गया था? .....
19. प्रेरितों ने पवित्र आत्मा कब पाया था? .....
20. कुरनेलियुस और उसके कुटुम्बियों ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा क्यों पाया?
    .....

21. प्रेरितों के पास क्या शक्ति थी? .....

22. अन्य व्यक्ति किस प्रकार से पवित्र आत्मा प्राप्त करते हैं? .....
.....

23. आत्माएं कितनी हैं? .....

24. आत्मा का फल क्या है? .....

25. पवित्र जन कैसे बोले थे? .....

26. पवित्र शास्त्र में से कितना परमेश्वर की प्रेरणा द्वारा रचा गया है? .....
.....

27. पवित्र शास्त्र कौन सी चार बातों के लिए लाभप्रद है? .....
.....

28. सत्य क्या है? .....

29. परमेश्वर किस के द्वारा बोला? .....

30. वे जो पवित्र शास्त्र में कुछ बढ़ायेंगे उनके साथ क्या होगा? .....
.....

31. वे जो पवित्र शास्त्र में से कुछ घटायेंगे उनके साथ क्या होगा?.....
.....

32. वे जो किसी दूसरे सुसमाचार का प्रचार करेंगे उनके साथ क्या होगा? .....
.....

33. प्रभु का वचन कहां पर स्थिर है?.....

34. क्या पवित्र शास्त्र लोप हो सकता है?.....

35. प्रभु का वचन कब तक स्थिर रहेगा?.....

36. लिखिए मत्ती 24:35 .....

37. यह भविष्द्वाणी किसने की थी कि कलीसिया या राज्य दृढ़ किया जाएगा?
.....

38. कलीसिया को बनाने की प्रतिज्ञा किसने की थी? .....
.....

39. इसकी स्थापना किस नगर में हुई थी? .....

40. इसकी स्थापना कब हुई थी? .....

41. यीशु मसीह की प्रतिष्ठा इसने कैसे की?.....

42. यीशु मसीह ने कलीसिया से कितना प्रेम किया? .....

43. यीशु मसीह ने कलीसिया के लिए क्या मूल्य दिया? .....
.....

44. कलीसियाएं कितनी हैं? .....

45. कलीसिया का उद्धारकर्त्ता कौन है? .....

46. कलीसिया का सिर कौन है? .....

47. इसका सदस्य कोई कैसे बन सकता है? .....

48. क्या यीशु मसीह इसके लिए वापस आएगा? .....
.....

49. कितने मनुष्य पापी है? .....

50. परमेश्वर ने मनुष्य को बचाने के लिए क्या किया? .....
.....

51. मनुष्य का उद्धार करने के लिए यीशु मसीह ने क्या किया? .....
.....

52. सुसमाचार कितना सामर्थी है? .....

53. सुसमाचार का प्रचार कहां करना है? .....

54. सुसमाचार की पांच आज्ञायें लिखिये? .....

55. 'बपतिस्मा' कितने हैं? .....

56. बपतिस्मा क्या है? .....

57. बपतिस्मा किसके नाम में लेना चाहिए? .....

58. मसीह और कलीसिया में कोई किस प्रकार से सम्मिलित होता है? .....
.....

59. बपतिस्मे के द्वारा क्या होता है? .....

60. उस एक नाम में क्या है? .....

61. प्रथम चेले क्या कहलाए थे? .....

62. हम यीशु मसीह की महिमा कैसे कर सकते हैं? .....
.....

63. हमें यीशु मसीह के नाम में क्या करना चाहिए? .....
.....

64. तीन प्रकार की उपासना के विषय में बतलाइये? .....
.....

65. उपासना करने के पांच नियम लिखिए? .....

66. मसीही लोग कौन से दिन उपासना करते हैं? .....
.....

67. सप्ताह का पहिला दिन इतना आवश्यक क्यों है? .....
.....

68. यदि कोई मसीह में है तो वह क्या है? .....

69. नई सृष्टि को अवश्य किसमें भाग लेना चाहिए? .....
.....

70. मसीही को क्या बान्धना है? .....

71. उसे अपने शरीर को क्या करना है? .....

72. जीवन का मुकुट कौन प्राप्त करेगा? .....

73. कितने मनुष्य मरेंगे? .....

74. हम जीयें या मरें, हमें क्या करना चाहिए? .....
.....

75. क्या यीशु मसीह फिर आयेगा? .....

76. वह किस प्रकार से आएगा? .....

77. विश्वासी जन उससे कहां पर मिलेंगे? .....

78. वे जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और सुसमाचार को नहीं मानते उनके साथ वह क्या करेगा? .....

79. सबसे पहिले कौन पुनर्जीवित हुआ? .....

80. कितने व्यक्ति पुनर्जीवित हो उठेंगे? .....
81. न्याय कब होगा? .....
82. न्याय का सामना किसको करना होगा? .....
83. न्याय कौन करेगा? .....
84. स्वर्ग में रहने के स्थान कितने हैं? .....
85. स्वर्गीय नगर में कौन प्रवेश करेगा? .....
86. नरक किस प्रकार का होगा? .....
87. उसका उद्देश्य क्या होगा? .....
88. इसका अन्त कितने समय में होगा? .....
89. क्या वहां अनन्तकाल होगा? .....
90. अनन्तकाल कितने समय तक रहेगा? .....

सत्य या झूठ

1. कोई परमेश्वर है ही नहीं .....
2. यीशु मसीह कुंवारी मरियम से पैदा हुआ था .....
.....
3. यीशु मसीह ने कोई भी आश्चर्यक्रम नहीं किये .....
.....
4. पवित्र आत्मा सहायक था .....
5. सब ने पवित्र आत्मा का बपतिस्मा लिया था .....
.....
6. पवित्र शास्त्र सम्भावत: टल जाएगा .....
7. यीशु मसीह ने कलीसिया को बनाया .....
8. कलीसिया एक ही है .....
9. केवल विश्वास ही के द्वारा उद्धार होता है .....

10. बपतिस्मा छिड़काव, उंडेलना, और गाड़ा जाना है .....

11. नाम आवश्यक नहीं है.....

12. सब तरह की उपासना परमेश्वर को स्वीकार्य है .....
.....

13. मसीही लोग परमेश्वर की उपासना करने के लिये सप्ताह के पहिले दिन जमा होते हैं .....

14. मसीही को बढ़ना है.....

15. एक समय उत्पन्न होने का है और एक मरने का .....
.....

16. हम जानते हैं कि मसीह कब वापस आएगा .....

17. केवल धर्मी लोग पुनर्जीवित हो उठेंगे .....

18. हम सब को न्याय का सामना करना पड़ेगा .....

19. यीशु मसीह हमारे लिए एक जगह तैयार करने गया है .....
.....

20. नरक दुष्टों से भरा हुआ होगा.....

21. सब लोग कहीं पर भी अनन्तकाल बिताएंगे .....

यह किसने कहा था?

1. ''कोई परमेश्वर है ही नहीं'' .....

2. ''यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिससे मैं प्रसन्न हूँ इसकी सुनो'' .....
.....

3. ''तो फिर आकर तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा'' .....
.....

4. ''और मैं इस पत्थर पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा'' .....

सारे प्रश्नों के उत्तर देकर इस पते पर भेज दीजिये

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
पोस्ट बॉक्स नं. 4398
नई दिल्ली-110019

कोरियर से भेजने के लिये हमारा पता है:

विनय डेविड
चर्च ऑफ़ क्राईस्ट
मार्केट नम्बर 4
सी. आर. पार्क
नई दिल्ली-110019